SHRI J.L.K. KOTECHA ARTS AND SMT. S.H. GARDI COMMERCE COLLEGE, KAKANPUR

Conducted by : SARVODAY CHARITABLE TRUST
Kakanpur - 388 713, Ta. Godhra, Dist. Panchmahal
College Code : 23 D.P. Code : 15

Principal : I/c Dr. J. N. Shashtri
Website : http://www.sjlkcollege.com

Tele. Fax No. : (O) 02672-286667
E-mail : k_kakanpur@yahoo.com

Ref./Sub.

No. :

Date :

Uploading Certificate

CERTIFICATE

This is to certify that the Minor Research Project, titled "Ahindibhasi Kshetrome Hindi Adhyapan ki Samasyae" awarded to (P. I. Name) Dr. J. L. PATEL has been completed and executive summary of the project has been uploded on the college/university. website, the URL link is http://www.sjlkkcollege.com

This certificate is as per the requirement under prescribed Minor Research Project guidelines.

Date:- 27-07-2020

Place:- Kakanpur

IC Principal
Shree J. L. K. Kotecha Arts & S. H
Gardi Commerce College, Kakanpur

Signature of the Principal
With Seal

Scanned with CamSca

COMPLETION OF

U. G. C SPONSORED AND ASSISTATED

MINOR RESEARCH PROJECT REPORT

Subject :

''अहिन्दीभाषी क्षेत्रों में हिन्दी अध्यापन की समस्याएँ''

Reference : File No. 23-168/12 (WRO) 5 Feb. 2013

Investigator

Dr. Jayantilal L. Patel

Head, Department of Hindi

Shri J. L. K. Kotecha Arts and Smt. S. H. Gardi Commerce College, Kakanpur, Ta – Godahra, Dist – Panchmahals, Gujarat, Pin – 388713

Gujarat University, Ahmedabad

THE JOINT SECRETARY

University Grants Commission

Ganeskhind, Pune – 4111007

Scanned with CamScanner

COMPLETION OF MINOR RESEARCH PROJECT REPORT

Investigator

Dr. Jayantilal L. Patel

Head, Department of Hindi

The Accounts officer

University Grants commission

Ganeshkhind, Pune – 4111007

Reference : File No. 23-168/12 (WRO) 5 Feb 2013

Subject : ''अहिन्दीभाषी क्षेत्रों में हिन्दी अध्यापन की समस्याएँ''

Scanned with CamSca

शोध अनुसंधान का शीर्षक (Project Title)

"अहिन्दीभाषी क्षेत्रों में हिन्दी अध्यापन की समस्याएँ"

❖ प्रास्ताविक (Introduciton)

युगपुरुष राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का मेरे जीवन-कवन पर पर्याप्त प्रभाव है। महात्मा गांधी को पूर्णरूपेण आत्मसात करना गंगावतरण जितना ही कठिन है, दूसरे महात्मा बनना जैसा है और उनके जैसे महापुरुष सदियों में एकाध बार अवतरित होते हैं। विज्ञान-पुरुष आइनस्टाइन महोदय ने सत्य ही कहा था कि भविष्य की पीढ़ियां इस पर शायद ही यकीन कर सके कि उनके जैसा हाड-मांस वाला कोई पुरुष उन्नीसवीं शताब्दी में भारत में पैदा हुआ था। संक्षेप में 'बापू' बनना तो अत्यन्त कठिन था, पर युगीन संस्कारों के चलते इतना तो तय किया कि बापू की विचारधारा के कतिपय आयामों को जीवन में उतारने की यथा शक्ति-मति चेष्टा की जाए। इनमें निम्नलिखित उल्लेख्य हैं -

१. खादी का परिधान और प्रचार,
२. सादगी,
३. शाकाहार,
४. मदिरापान से दूर रहना,
५. पत्नी और नारी को सम्मान देना,
६. कृषि-संस्कृति को बढावा देना,
७. हिन्दी का प्रचार-प्रसार और अध्ययन-अध्यापन,
८. भाषागत शुद्धता।

उपर्युक्त में से अंतिम दो का सम्बन्ध मेरी शोध-परियोजना से है। हिन्दी का अध्यापक होने के नाते मैंने सोचा कि हिन्दी-लेखन में, उसकी बर्तनी में प्रायः छात्र अनेकानेक गलतियां करते हैं, यहां तक कि कुछ हिन्दी के अध्यापक तक इससे पूर्णतया मुक्त नहीं है। अतः मुझे इस दिशा में अग्रसरित होना चाहिए। इस विचार के मूल में मेरी अपनी सन्नद्धता तथा सक्रियता भी कारणभूत है। पुरानी शिक्षापद्धति

Scanned with CamScanner

दोषपूर्ण होते हुए भी उसमें कुछ अच्छे तत्व थे, मसलन् चौथी कक्षा तक केवल भाषा और गणित पर ही ज्यादा तवज्जो देना। कक्षा-प्रवेश के साथ शिक्षक दो काम करते थे - शब्द लिखाना और 'पलाखे' लिखाना। 'पलाखे' का मतमब है पहाड़े लिखवाना या पहाड़ो में से कुछ पूछना, जैसे-9×7=? 7×7=? आदि-आदि। जब मैं दूसरी कक्षा में था तबका एक वाक्य मुझे ताजिन्दगी याद रहेगा और मेरी इस शोध परियोजना का एक मुकम्मल कारण भी शायद यही है। हमारे खेमाभाई 'माट साब' शब्द लिखा रहे थे (गुजराती के), उसमें एक शब्द था 'कूतरो' (हिन्दी में कुत्ता) मैंने उस शब्द की बर्तनी गलत लिखी थी, यथा 'कुतरो'। परिणामतः उस दिन मेरे दश में दश शब्द सही नहीं निकले, एक शब्द गलत पड़ गया। साहब ने मेरे कान मरोड़ते हुए कहा कि 'कूतरो' में 'कु' ह्रस्व नहीं अपितु दीर्घ होता है। बावजूद 'कूत्ते की दुम' वाले मुहावरे के बरअक्श कमजकम मेरी दुम तो उस दिन सीधी हो गई। उस दिन से मैं ह्रस्व-दीर्घ इत्यादि में विशेष ध्यान रखता था, बल्कि कई बार तो भी रट्टा लगाता था।

जैसा कि मैंने ऊपर बताया है गांधीजी के अनेक कामों में एक काम भाषागत शुद्धता का आग्रह भी है। गांधीजी नहीं चाहते थे कि अपनी भाषा को अशुद्ध रुप से लिखा जाए। जब हम अंग्रेजी के 'स्पेलिंग' गलत नहीं लिखते, या गलत होता है तो उसे गलत करार दिया जाता है और आगे से ऐसा न हो उसके लिए पूरे एहतियात बरततें है, तो फिर अपनी भाषा को हम गलत क्यों लिखते है, या गलत लिखने पर हमें उसका पछतावा क्यों नहीं होता। गांधीजी का आग्रह था कि अपनी मातृभाषा गुजराती की एक मानक बर्तनी हो, ता कि लोग मनचाहे ढंग से न लिखें। इस हेतु उन्होंने नवजीवन प्रेस से 'सार्थ गुजराती जोडणीकोश' प्रकाशित करवाया था। उसकी भूमिका में उन्होंने लिखा है कि किसी गुजराती, शिक्षित गुजराती को, यह हक नहीं पहुंचता है कि किसी शब्द की 'जोडणी' (बर्तनी-स्पेलिंग) वह गलत लिखें। आजकल गांधी विचारधारा के एक मुद्दे को लेते हुए 'स्वच्छता अभियान' चलाया जा रहा है। इनके प्रचारकों को समझना चाहिए कि महात्मा गांधी जिस स्वच्छता की बात करते हैं वह तन-मन-धन, अन्दर-बाहर, करनी-कथनी सभी प्रकार की शुद्धि की बात करते हैं। जिसके अंतर्गत भाषागत शुद्धता भी आती है। गांधीयुग के शिक्षक व अध्यापक

Scanned with CamScanner

भाषागत शुद्धता का आग्रह किस सीमा तक रखते थे, उस सम्बन्ध में एक चुटकुला (लतिफा जोक) प्रसिद्ध हुआ था। ऐसे कोई एक गांधीवादी अध्यापक की पुत्री किसीके साथ भागकर शादी कर लेती है, उस पर अध्यापक महोदय खूब हायतोबा मचाते हैं, तब कोई सियाना उनके पास जाकर समझाता है कि आजकल तो यह आम बात है। तब घटस्फोट करते हुए अध्यापक महोदय बताते हैं कि दुःख मुझे इसका नहीं है कि उसने भागकर शादी क्यों कि, पर मेरी लड़की होते हुए उसने 'आशिर्वाद' गलत कैसे लिखा? ध्यान रहे 'आशीर्वाद' की बर्तनी में 'शी' दीर्घ लिखा जाता है, न कि ह्रस्व। बहरहाल कमजकम गांधीजी की एक बात को भाषा-शुद्धि की बात को ध्यान में रखते हुए हमने प्रस्तुत शोध-परियोजना पर काम करने का अपना विचार बनाया।

❖ शोध-अनुसंधान का उत्स (Origin of the Research Problem)

मैं हिन्दी भाषा और साहित्य का प्राध्यापक हूँ। इस नाते मेरा वास्ता छात्र-छात्राओं की उत्तर-पुस्तिकाओं से पड़ता है। जैसा कि मैंने ऊपर निर्दिष्ट किया है मैं शुरू से ही शुद्ध भाषा लेखन का आग्रही रहा हूं, अतः अपने छात्र-छात्राओं की लेखन की गलतियों की ओर मेरा ध्यान सविशेष जाता था। अतः मेरे अंदर, मेरे भीतर बैठे अध्यापक में एक जद्दोजहद चलती रहती थी कि इन गलतियों को कैसे दूर किया जाए। फिर मैंने देखा कि हमारे यहां गुजरात में शिक्षित कहे जानेवाले लोगों में भी अपनी भाषा गुजराती के शुद्ध लेखन की ओर लोगों का ध्यान नहीं है। बहुत से शिक्षित लोग पर अन्य व्यवसाय के, जैसे डाक्टर, एंजीनियर, कोन्ट्राक्टर, व्यापारी, राजनीतक आदि, या अध्यापकों में भाषाओं के विषय न पढ़ानेवाले अध्यापक, जैसे गणित, विज्ञान, इतिहास, भूगोल, समाजशास्त्र, आदि-आदि पढ़ानेवाले अध्यापक भाषा लेखन में ह्रस्व-दीर्घ इत्यादि का विचार नहीं करते हैं, बल्कि गुजरात के छात्र-छात्राओं में यह विचार दृढ़मूल हो गया है कि ह्रस्व-दीर्घ इत्यादि का विचार केवल भाषागत विषयों में होता है और अन्य विषयों में उसकी आवश्यकता नहीं है, वहां पर केवल मुद्दों पर विचार किया जाता है। यदि किसी प्रश्न विशेष में आपने सभी मुद्दों को ले लिया है तो आपको पूरे अंक मिलेंगे फिर भाषा भले ही दोषपूर्ण क्यों न हो। हमने अध्यापकों तक में यह देखा है कि वे अपने विषय की बर्तनी भी ढंग से नहीं लिखते हैं,

Scanned with CamScanner

यथा-गणीत, इतीहास, वीज्ञान आदि, जबकि होना चाहिए-गणित, इतिहास, विज्ञान।

इसके अतिरिक्त हमने देखा कि बहुत- से शिक्षित (ऊपर बताए हुए) व्यक्ति भी अनपे नाम तक की बर्तनी सही नहीं लिखते है, यथा- 'निरव' (नीरव), 'मयुरभाई' (मयूरभाई), 'जवेरभाई' (झवेरभाई), 'रविन्द्रनाथ' (रवीन्द्रनाथ), 'शशीकान्त' (शशिकान्त), ('नीतिन') (नीतीश), आदि-आदि। यहां पर कोष्टक में हमने सही बर्तनी बताई है। ये तो परिगणना हेतु थोड़े- से उदाहरण दिए है, अन्यथा ये लोग बर्तनी के बेशुमार और बेहिसाब गलतियां करते हैं।

ह्रस्व-दीर्घ के अतिरिक्त स, श, ष, ग, घ, ज, झ, म, भ आदि की गलतियां भी लोग करते हैं। हिन्दी में अनुस्वार के स्थान पर कहीं-कहीं अनुनाशिक ध्वनि का प्रयोग होता है, जैसे- संत-सन्त, चंपा-चम्पा, सेंटर, सेण्टर, तो यहां भी लोग- बाग गलत लिखते हैं। मैंने स्वंय अनेक स्थानों पर लिखा हुआ पाया सेन्टर, जबकि वह होना चाहिए- सेण्टर।

हिन्दी में नुक्ता या बिन्दी की भी एक समस्या है। हिन्दी में जो शब्द अरबी-फारसी मूल से आये हैं उनमें क, ख, ज, फ, ग आदि में नुक्ता लगायी जाती है, जैसे क़नीज, ख़्वाज, ज़मीन, फ़क्र, ग़बन, आदि-आदि। पुराने लोग तो इन सबका विचार करते हुए इन-इन अक्षरों के नीचे नुक्ता या बिन्दी लगाया करते थे, लेकिन अब लेखन में अधिक सरलीकरण लाने हेतु उक्त अक्षरों के नीचे (अरबी-फारसी मूल के भी) बिन्दी या नुक्ता न हो तो उसे गलत नहीं करार दिया जाता। परन्तु इसके अलावा हिन्दी में कहीं-कहीं 'ड' और 'ढ' के नीचे नुक्ता लगती है। यहाँ पर गौर फरमाएं कहीं- कहीं पर, अर्थात्, जहा-जहां भी 'ड' और 'ढ' आते हैं, वहां-वहां नहीं। कहीं लगती है और कहीं नहीं लगती, तो यहां भी बहुत- से लोग गलती कर जाते हैं।

इसके अतिरिक्त 'है' और 'हैं', 'थी' और 'थीं' में भी गुजराती भाषी लोग और छात्र प्रायः गलती कर जाते हैं। इसका एक कारण यह भी है कि गुजराती में इस तरह का अंतर नहीं है। वहां तो 'छोकरो जाय छे', 'छोकराओं जाय छे'। अर्थात् 'है' के स्थान पर आनेवाला 'छे' एकवचन तथा बहुवचन दोनों में 'छे' ही रहता है, जबकि हिन्दी में

Scanned with CamScanner

एकवचन में 'है' आयेगा और बहुवचन में 'हैं' । इसी तरह 'थी' और 'थीं' का भी होगा। 'और' और 'ओर' के अंतर को न समझने के कारण और सादृशता के कारण यहां भी गलतियां पाई जाती है।

गलतियों के कारणों का विश्लेषण :

बर्तनी की ये गलतियाँ क्यों होती है उस पर भी हमने विचार किया है। मेरी मातृभाषा गुजराती है अतः गुजराती के संदर्भ में मैं कुछ बातें रखूंगा –

१. भाषागत आलस्य, प्रमाद और लापरवाही,
२. कुछ शब्दों की बर्तनी में अंतर का पाया जाना,
३. लिपि – विषयक,
४. उच्चारण – विषयक,
५. अंग्रेजी स्पेलिंग के कारण ।

इन–इन कारणों से गुजराती–भाषी लोगों, अध्यापकों और छात्रों में बर्तनी सम्बन्धी गलतियां पाई जाती हैं। अब क्रमशः बहुत संक्षेप में तथा सोदाहरण उक्त कारणों की चर्चा की जाएगी।

(१) भाषागत आलस्य, प्रमाद और लापरवाही :–

जिन शब्दों में ह्रस्व–दीर्घ से फरक पड़ता हो, जैसे–कटि =कमर, कटी = कटना क्रिया का एक रूप; दीन = गरीब, दिन = दिवस; कुल=वंश, कूल=किनारा आदि–आदि। वहां तो इनका सविशेष ध्यान रखना ही होगा, परंतु जहां ह्रस्व–दीर्घ से फरक न पड़ता हो वहां भी मानक बर्तनी ही होनी चाहिए। लेकिन बहुत से गुजराती लोग आलस्य प्रमाद, लापरवाही या अज्ञान से बर्तनी का ध्यान नहीं रखते हैं और यदि कोई बतावे तो कुतर्क करने बैठ जाते हैं। व्यक्तिवादी संज्ञाओं में लोग मनमाने ढंग से शब्द लिखते हैं, जैसे – निरव (नीरव), प्रिति (प्रीति), किर्ति (कीर्ति), नुपुर (नूपुर) आदि–आदि । यहां कोष्ठक में सही बर्तनी लिखी गई है। लोग लाखों–करोड़ों का खर्च करके मकान या बंगला बनवाते हैं, परंतु जब उसके आगे नाम की

Scanned with CamScanner

तख्ती लगाते हैं तो गलत लिखते हैं, जैसे- मयुरकुंज (मयूरकुंज), नीशान्त (निशान्त), टहुको (टहूको), रीद्धि-सीद्धि (रिद्धि-सिद्धि), रती निवास (रतिनिवास) आदि-आदि । यहां लापरवाही प्रमाद इत्यादि कारण होते हैं।

(२) कुछ शब्दों की बर्तनी में अंतर पाया जाना :-

यद्यपि हिन्दी और गुजराती उभय की जननी तो संस्कृत है किन्तु कुछ शब्द गुजराती और हिन्दी में बर्तनी के हिसाब से अलग-अलग तरह से लिखे जाते हैं। इसी वजह से भी कई बार गुजराती छात्र व अध्यापक हिन्दी में उन शब्दों की बर्तनी गलत लिखते हैं, जैसे मुज (गुजराती), मुझ (हिन्दी) शकवुं (गुजराती क्रिया), सकना (हिन्दी); शीखवुं (गुजराती), सिखना (हिन्दी), शिंग (गुजराती), सिंग (हिन्दी) आदि-आदि। कुछ शब्दों की बर्तनी बहुवचन करते समय हिन्दी में बदल जाती है, जैसे नदी-नदियां, स्त्री-स्त्रियां, नारी-नारियां, दवाई-दवाइयां आदि-आदि। किन्तु गुजराती में ऐसा नहीं होता। वहां पर बहुवचन में नदीओ, स्त्रीओ, नारीओ, दवाओ आदि ही रहता है। इसी तरह ऊकारान्त शब्दों में भी हिन्दी में वचन के हिसाब से परिवर्तन हो जाता है , लेकनि गुजराती में नहीं होता है, जैसे बापू-बापूओंको, चाकू-चाकुओंको, बाजू-बाजूओं को (हिन्दी); लेकिन गुजराती में बर्तनी वहीं रहेगी।

(३) लिपि विषयक :-

हिन्दी और गुजराती में कुछ अक्षरों की लिपि में कुछ समानता जैसा है या मामूली-सा फरक है, जिसके कारण कई बार कुछ गलतियां हो जाती हैं जिन्हें हम लिपि-विषयक गलतियां कह सकते हैं, यथा-म,भ,द्य,घ, क, फ आदि अक्षरों में। गुजराती में तो 'ભ' (बीएच) स्पष्ट है, अतः गुजराती लिखनेवाले 'म' को कई 'भ' की तरह लिखते हैं। ऐसे ही 'ए' और 'ऐ' का है। गुजराती में उसे 'अे' और 'अै' के रूप में लिखा जाता है। अतः कई बार गुजराती भाषी छात्र 'ऐतिहासिक' को 'ऐतिहासिक' लिखते हैं।

(४) उच्चारण - विषयक :-

Scanned with CamScanner

कई बार कुछ लोग जिस प्रकार का उच्चारण करते हैं, उसी तरह ही लिखते हैं। गुजरात में दक्षिण गुजरात के लोग 'ळ' का उच्चारण 'र' जैसा करते हैं। यदि उन्हें 'कम ल' बोलना हो तो बोलेंगे 'कमर'। सूरत में एक अस्पताल के बाहर लिखा था- 'दर्दीने मरवानो समय-चार से छ'। वे कहना यह चाह रहे थे कि 'दर्दीने मळवानो समय' इसी तरह बहुत से सूरती 'न' का उच्चारण 'ल' करते हैं। उन्हें कहना होगा- 'आ काम में करी नाख्युं छे' तो कहेंगे 'आ काम मे करी लाख्युं छे'। अतः उनके लेखन में भी कई बार ये गलतियां उतर आती है।

(५) अंग्रेजी स्पेलिंग के कारण :-

अंग्रेजी में 'उ' के लिए 'u' और 'ऊ' के लिए 'oo' और इसी तरह 'इ' के लिए 'i' और 'ई' के लिए 'ee' लिखा जाता है, परंतु इसका पालन सर्वत्र नहीं होता है। अधिकांशतः 'उ' और 'ऊ' दोनों के लिए 'u' ही लिखा जाता है और इसी तरह 'इ' और 'ई' दोनों के लिए प्रायः 'i' ही चलता है। परिणामतः जब 'नीरव' लिखना हो तो लोग अंग्रेजी में 'Neerav' के स्थान पर 'Nirav' ही लिखते हैं। उसी तरह 'मयूर' के लिए नियमतः लिखना चाहिए 'Mayoor' पर ज्यादातर लोग लिखते हैं 'Mayur' और इसीलिए जब उसे हिन्दी में नागरी लिपि में लिखना हो तो प्रायः गलतियां हो जाती हैं।

लब्बोलुबाव बात यह है कि बर्तनी की शुद्धि के संदर्भ में हम इतने सख्त हो गये कि कोई हमें खब्ती भी कह सकता है और उसीके फलस्वरूप है हमारी यह शोध-परियोजना।

शोध परियोजना की रूपरेखा : अध्यायीकरण :-

हमारे शोध-विषय से इतना तो स्पष्ट है कि उसमें दोनों प्रकार का कार्य है - टेबल-वर्क (लेखन कार्य) और फिल्ड-वर्क (क्षेत्रीय कार्य)। पहले हमने डेढ़-दो साल अलग-अलग गाँवो-शहरों में स्कूलों में जाकर तथ्य संग्रह (डेटा कलेक्शन) का

Scanned with CamSca

काम किया और उसके संपन्न होने पर एतद्-विषयक लेखन-कार्य शुरू किया। हमने अपने इस लघु-शोधप्रबंध को चार अध्यायों में विभक्त किया है ।

१. प्रथम अध्याय : शोध-प्रविधि और प्रक्रिया
२. द्वितीय अध्याय : बर्तनी : सुधार (१)
३. तृतीय अध्याय : बर्तनी - सुधार (२)
४. चतुर्थ अध्याय : शोध-परियोजना के परिणाम

प्रथम अध्याय 'शोध प्रविधि और प्रक्रिया' का है। इसमें प्रारंभ में हमने बर्तनी-शुद्ध भाषा की आवश्यकता पर बल दिया है और निश्पादित किया है कि गलत बर्तनी से कैसे अर्थ का अनर्थ हो सकता है। उसके पश्चात् हमने अपनी शोध-योजना की रूपरेखा को रखा है। इसे हमने पांच संवर्गों में विभाजित किया है -

१. शिक्षा-संस्थाओं का प्रयोग ।
२. छात्रों की विभिन्न स्तरीय कक्षाओं की उत्तर-पुस्तिकाओं का परीक्षण।
३. लगभग दो सौ शब्दों की सूची तैयार कर उसे लिखवाना और उसका परीक्षण करना।
४. विभिन्न शहरों की यात्रा ।

प्रथम संवर्ग के अनुसार हमने गुजरात के दस स्कूलों और आठ कॉलेजो का चयन किया। आचार्य और हिन्दी के अध्यापकों से मिलकर उन्हें हमारी योजना से अवगत किया और उनसे अनुमति ले ली कि वे अपने छात्रों की उत्तर-पुस्तिकाएं पुनरावलोकन हेतु प्रदान करेंगे।

हमारी शोध-परियोजना का दूसरा सोपान था विभिन्न स्कूलों और कॉलेजों के छात्रों की उत्तर-पुस्तिकाओं के परीक्षण से उनके द्वारा होने वाली गलतियों की सूची तैयार करना। हमने इसके लिए स्कूल के छात्रों को दो वर्गों में विभक्त किया - (क) पांचवीं कक्षा से दशवीं कक्षा तक के छात्र, और (ख) ग्यारहवीं और बारहवीं कक्षा के छात्र। उसी तरह कॉलेज के छात्रों के तीन वर्ग किए (१) स्नातक कक्षाओं तक के छात्र, (२) अनुस्नातक कक्षाओं के छात्र, (३) शोध-कार्य (पी-एच्.डी) करने वाले

Scanned with CamSca

छात्र। इस सर्वेक्षण के उपरान्त उक्त विभिन्न वर्गों के छात्र किन-किन प्रकार की गलतियां करते हैं उसका निष्कर्ष निकालते हुए ऐसे कुछ शब्दों को सूचीबद्ध किया।

इस परियोजना के तीसरे सोपान में हमने लगभग दो सौ शब्दों की सूची तैयार की जिनके लेखन में प्रायः गलतियां होती हैं। हमने प्रत्यक्ष रूप से इन विभिन्न संवर्गों के छात्रों से ये शब्द लिखवाये और फिर उनका परीक्षण किया। इन दो सौ शब्दों की सूची हमने अपने इस प्रबंध में संलग्नित की है।

प्रस्तुत अध्याय के दूसरे भाग में हमने अपने सर्वेक्षण का परिणाम देते हुए विभिन्न वर्ग के छात्र किन-किन प्रकार की गलतियां करते हैं उसे निरूपित किया है। इन गलतियों को हमने निम्नलिखित रूप से विभक्त किया है -

(क) ह्रस्व 'इ' और दीर्घ 'ई' (ि, ी) की गलतियां ।

(ख) ह्रस्व 'उ' और दीर्घ 'ऊ' (ु, ू) की गलतियां।

(ग) स, श, ष से सम्बन्धित गलतियां ।

(घ) लिपि-विषयक गलतियां ।

(च) अन्य प्रकार की गलतियां :

१. 'कि' और 'की' की गलतियां

२. 'और' और 'ओर' की गलतियां

३. 'है' और 'हैं' की गलतियां

४. 'थी' और 'थीं' की गलतियां

५. 'ड' और 'ड़' की गलतियां

६. 'ढ' और 'ढ़' की गलतियां

Scanned with CamScanner

इन सब गलतियों के कई-कई उदाहरण भी हमने प्रस्तुत किए हैं।

दूसरे और तीसरे अध्याय में हमने उन नियमों की चर्चा की है जिनके कारण इन गलतियों में सुधार हो सकता है। तीसरे अध्याय में हमने यह चर्चा की है कि कहां ह्रस्व 'कि' और कहां दीर्घ 'की' का प्रयोग होता है, कहां 'और' और कहां 'ओर' का प्रयोग होता है; उसी तरह 'है' और 'हैं', 'थी' और 'थीं', 'ड' और 'ड़', 'ढ' और 'ढ़' आदि का प्रयोग कहां और कैसे होता है उसकी चर्चा कई-कई उदाहरण देकर की है, गुजराती में 'नहीं' और 'नहि' दोनों का प्रयोग होता है किन्तु हिन्दी में केवल 'नहीं' का प्रयोग ही होता है, यह भी उदाहरणों द्वारा स्पष्ट किया गया है। इसके उपरांत इसी अध्याय में हमने ह्रस्व 'इ' और दीर्घ 'ई' की गलतियां न हो इसलिए उनसे संबंधित कुछ नियमों की चर्चा की है। कुछ लोग कहते हैं कि इसमें कौन-सा सातवां आसमान टूट पड़ने वाला है? तो हमने यहां कुछ ऐसे उदाहरण भी दिए हैं जिनमें ह्रस्व -दीर्घ से अर्थ में काफी अंतर आ जाता है। ऐसे लगभग तीस शब्द-युग्मों को हमने दिया है। इसके उपरान्त हमारे छंद-शास्त्र में गुरु-लघु योजना तथा गणयोजना में इसका महत्व कितना अपरिहार्य है, यह भी सूचित किया है।

यहां हमने उनको 'इक', 'इत', 'इन', 'ईय' वाला नियम दिया है। 'इक' और 'इत' प्रत्यय से बनें शब्दों में प्रायः ह्रस्व 'ि' ही आता है और 'इन' और 'ईस' वाले शब्दों में दीर्घ 'ई' (ी) आता है। इसके लिए हमने लगभग सौ-सौ उदाहरण दिए हैं।

इसके बाद हमने यह नियम दिया है कि जहां शब्दों के अंत में या, ये, यां, ए आते हैं वहां उसके पूर्व की 'इ' ह्रस्व ही होतीहै। 'इका' और 'इमा' वाले शब्दों में भी ह्रस्व 'इ' (ि) ही आती है। इसके उपरान्त इसी अध्याय में हमने 'ईकारान्त' शब्दों की एक सुदीर्घ सूची भी दी है। संस्कृत के 'ईकारान्त' शब्दों की भी चर्चा की है और यह प्रस्थापित किया है कि 'ईकारान्त' होना यह हिन्दी की प्रकृति है किन्तु संस्कृत में हमें कई 'इकारान्त' शब्द मिलते हैं। अध्याय के अंत में संस्कृत भाषा की एक विशेषता भी लक्षित की है कि कैसे रावण का 'रावणि' और दशरथ का 'दाशरथि' कर देने से उनके अर्थ क्रमशः रावणपुत्र 'मेघनाद' और दशरथपुत्र 'राम' हो जाते हैं।

Scanned with CamSca

तृतीय अध्याय की बर्तनी के नियमों से ही सम्बद्ध है। इसमें हमने बताया है कि 'ऊकारान्त' शब्द कहां-कहां आते हैं। कैसे बहुवचन का 'ओंको' या 'आंसे' या 'ओंने' लगने से 'ऊकारान्त' शब्द भी 'उकारान्त' हो जाता है, जैसे डाकू-डाकुओं ने, बाबू-बाबुओं को आदि-आदि। भविष्यवाची 'ऊंगा' प्रत्यय वाले शब्द भी 'ऊं' होता है। जैसे- कहूंगा, बोलूंगा, खेलूंगा आदि-आदि। इसमें हमने प्रतिपादित किया है-

- प्रायः द्विअक्षरी शब्दों में 'ऊकारान्त' होता है, जैसे बाबू, बापू, डाकू, चाकू, शालू, भोंपू आदि-आदि।
- एकाक्षरी शब्दों में भी 'ऊ' होता है, जैसे बू, गू, जूं, फू आदि-आदि ।
- प्रायः त्रिअक्षरी शब्द भी 'ऊकारान्त' होते हैं, जैसे- बिकाऊ, टिकाऊ, जड़ाऊ, बाजारू, जूझारू आदि-आदि।

इसी तरह 'उकारान्त' कहां-कहां आता है यह भी यहां स्पष्ट किया गया है। निम्नलिखित स्थितियों में 'उकारान्त' शब्द आते हैं -

- जहां शब्द के पीछे 'लु' प्रत्यय आता है, जैसे दयालु, कृपालु, ईर्ष्यालु आदि-आदि।
- मूल शब्द 'ऊकारान्त' होता है, किन्तु उसके बहुवचन के रूप में जहां 'ओं' प्रत्यय लग जाता है। उदाहरण ऊपर दिए गए हैं।

यहां हमने अभ्यास हेतु ह्रस्व 'उ' और दीर्घ 'ऊ' से शुरू होने वाले शब्दों की एक विस्तृत सूची भी दी है।

ह्रस्व 'उ' और दीर्घ 'ऊ' की चर्चा के बाद हमने अनुस्वार के स्थान पर अनुनासिक ध्वनि कैसे लगती है उसके नियमों की चर्चा की है और प्रस्थापित किया है कि अनुस्वार के स्थान पर अनुनासिक ध्वनि 'क, च, ट, त, प' इन पांच वर्गों में ही लगती है, शेष में अनुस्वार ही लगता है। नीचे प्रत्येक वर्ग से कुछ उदाहरण दिए गए हैं-

Scanned with CamScanner

- 'क' वर्ग - गंगा- ग गा, पंखा-प खा ('क' वर्ग की अंतिम अनुनासिक ध्वनि 'ङ' है।)
- 'च' वर्ग - चंचल-च चल, पंजा-प जा ('च' वर्ग की अंतिम अनुनासिक ध्वनि 'ञ' है।)
- 'ट' वर्ग- सेंटर-सेण्टर, डंठल-टण्ठल ('ट' वर्ग की अंतिम अनुनासिक ध्वनि 'ण' है।)
- 'त' वर्ग - दंत-दन्त, पंत-पन्त, मंद-मन्द ('त' वर्ग की अंतिम अनुनासिक ध्वनि 'न्' है।)
- 'प' वर्ग-चंपा-चम्पा, दंभ-दम्भ, ('प' वर्ग की अंतिम अनुनासिक ध्वनि 'म्' है।)

यहां हमने यह भी स्पष्ट किया है कि पहले चन्द्रबिन्दु (गाँव) वाले शब्दों में चन्द्रबिन्दु ही लगता था परन्तु अब यह छूट दी गई है कि उसके स्थान पर अनुस्वार से काम चलाया जाए, जैसे-गाँव-गांव, पाँव-पांव आदि-आदि।

इसके अतिरिक्त इस अध्याय में निम्नलिखित गलतियों पर विचार किया गया है।

(क) लिपि-विषयक गलतियां,

(ख) सर्वनाम विषयक गलतियां,

(ग) 'ने' और 'को' विषयक गलतियां

(घ) 'की' और 'करी' विषयक गलतियां,

(च) 'स', 'श', 'ष' विषयक गलतियां,

(छ) 'रु' और 'ख' विषयक गलतियां,

(ज) 'ज' और 'झ' विषयक गलतियां,

Scanned with CamScanner

(झ) 'तू', 'तुम' और 'आप' के प्रयोग विषयक गलतियां,

(ट) 'ग' और 'घ', 'घ' और 'ध', 'म' और 'भ' आदि की गलतियां,

(ठ) कारकयुक्त शब्दों को लिखने के विषय में गलतियां,

(ड) उच्चारण विषयक गलतियां,

(ढ) अंकलेखन विषयक गलतियां।

इसके अतिरिक्त इस अध्याय में हमने यथावश्यक 'स', 'श', 'ष' वाले शब्दों की सूची, 'रू' और 'रू' वाले शब्दों की सूची आदि को भी अभ्यास हेतु प्रस्तुत किया है।

चतुर्थ अध्याय में हमने अपनी शोध-परियोजना के परिणामों की विशद् चर्चा की है। बर्तनी विषयक नियमों को समझाने के उपरान्त इन गलतियों में किनता प्रतिशत सुधार हुआ है इसकी चर्चा तथ्यों के साथ 'facts & Figures'की गई है। यहां भी विभिन्न कक्षाओं और स्तरों के हिसाब से विचार किया गया है।

लघु-शोधप्रबंध के अंत में 'उपसंहार' Epilogue है जिसमें समग्रावलोकन की प्रक्रिया द्धारा चारों अध्यायों का सार-संक्षेप, निष्कर्ष, शोधकार्य की उपादेयता और उसकी भविष्यत संभावनाओं पर प्रकाश डाला है।

अंत में ग्रन्थानुक्रमणिका (Bibliography) जिसमें अकारादि क्रम से सहायक ग्रन्थ, कोश-ग्रन्थ इत्यादि का उल्लेख किया गया है।

अन्य विद्याशाखाओं से सम्बन्ध :- (Interdisciplinary Relerance)

हमारी इस शोध-परियोजना के विषय का सम्बन्ध कई विद्याशाखाओं और विषयों से है। इसमें प्रकटतः हिन्दी, गुजराती, संस्कृत, अंग्रेजी आदि विषयों का सम्बन्ध है। हिन्दी व्याकरण, गुजराती व्याकरण, भाषाविज्ञान आदि अन्य विद्याशाखाओं से भी वह सम्बद्ध है। इसका राष्ट्रीय एवं प्रांतीय स्तर पर महत्व है।

Scanned with CamScanner

विषय का महत्व एवं उद्देश्य :- (Significance & Objectives)

शोध-परियोजना का विषय महत्वपूर्ण इसलिए है कि उसका सम्बन्ध भाषागत शुद्धता एवं शुद्ध बर्तनी से है। आजकल छात्रों में, यहां तक कि अध्यापकों में भी बर्तनी विषयक गलतियां बहुत बढ़ गई हैं। भाषागत शुद्धता पर जागरूकता लाने की जरूरत है, क्योंकि बहुत से लोग इसे गंभीरता से नहीं लेते हैं। हमारा उद्देश्य यह है कि छात्रों और अध्यापकों में एतद् विषयक जागरूकता बढ़ें और वे बर्तनी शुद्ध भाषा- लेखन की ओर अग्रसरित हों। ह्रस्व दीर्घ इत्यादि का भाषा में बहुत ही महत्व है। कई बार ह्रस्व- दीर्घ के अंतर से शब्दों के अर्थ में आसमान-जमीन का अंतर आ जाता है। हमने अपने इस लघु-शोधप्रबंध में ऐसे कई उदाहरण दिए हैं। कईबार 'स' के स्थान पर 'श' लिखने से भी अर्थ का अनर्थ हो जाता है, यथा सब = सभी और शब=मुर्दा। इसका एक बड़ा ही मनोरंजक उदाहरण 'सुभिक्षा' नामक एक मोल का नाम था जिसमें कई प्रकार की चीजें किफायती दामों पर और एक स्थान पर मिल जाती थी। भाषा और बर्तनी के संदर्भ में निजी जागरूकता के चलते मेरे मन में विचार आया कि यह तो गलत है- 'सुभिक्षा' अर्थात् अच्छी भिक्षा और लोग वहाँ पैसे खर्च करके उत्तम का अच्छी चीज लेने जाते हैं न कि भिक्षा। बहुत सरपच्ची करने के उपरान्त मेरा ध्यान गया कि यह तो कोई दक्षिण की कंपनी है और दक्षिणी भाषाओं में (तमिल, तेलुगु, कन्नड़ इत्यादि में) 'श' के लिए 'स' लिखा जाता है, अतः मूल शब्द होगा- 'शुभिक्षा', अर्थात् शुभ+इक्षा, मतलब कि शुभ (अच्छी) आकांक्षा रखकर जाना। इस प्रकार हमारे इस अध्ययन और अनुसंधान का मूल उद्देश्य भाषा की शुद्धता, उसकी वैज्ञानिकता, तार्किकता इत्यादि को सामने लाना है। अभी तक हम सीखते आये थे कि क = k और ख = kh; प = p और फ = ph; पर भाषाविज्ञान की जब उच्चारणशाखा ध्वनि विज्ञान की ओर ध्यान गया तो ज्ञात हुआ कि यह तो वैज्ञानिक है-'क' के तुरंत बाद 'ह' और 'प' के तुरंत बाद 'ह' बोलने से उनकी ध्वनि क्रमशः 'ख' और 'फ' के समान होती है। हमारी वर्णमाला में वर्णों के स्थान इत्यादि भी वैज्ञानिक एवं तर्कसम्मत है। अतः हम कह सकते हैं कि हमारे इस शोध-प्रोजेक्ट का सम्बन्ध भाषाविज्ञान और उसकी अनेकानेक शाखाओं से भी है।

Scanned with CamScanner

शोध-परियोजना के निष्कर्ष रूप में कुछ सुझाव :-

शुद्ध हिन्दी-लेखन की प्रस्तुत शोध-परियोजना के निष्कर्ष रूप में मैं कतिपय सुझाव देना चाहूँगा, जिससे छात्रों और अध्यापकों में शुद्ध हिन्दी- लेखन का आग्रह बढ़े और उनका लेखन विशुद्ध हो।

१. अध्यापकों से निवेदन :

२. शुद्ध-लेखन का आग्रह :

३. श्यामपटल का उपयोग :

४. नियमावली के पोस्टर बनाना :

५. प्रतिदिन एक पृष्ठ को देख-देखकर लिखना :

६. पत्र-पत्रिकाओं का पठन-पाठन :

७. अनुस्वार के स्थान पर 'न', 'म', 'ण' का प्रयोग :

८. गाँव शहर की पदयात्रा :

९. हर जगह सीखने का दृष्टिकोण :

संक्षेप में यही कहना चाहूंगा कि मेरे इस सारस्वत और विद्याकीय प्रयास से छात्र-छात्राओं तथा अध्यापकों को फायदा होगा। भाषा और बर्तनी से सम्बद्ध बातों पर उनका ध्यान जायेगा, गलतियां कम होंगी और भाषागत शुद्धता की जागरूकता बढ़ेगी। शब्दकोशों का प्रचलन बढ़ेगा और भाषागत प्रमाद एवं आलस्य दूर होगा।

अन्त में मैं उन स्कूलों और कॉलेजों के संचालक, आचार्य तथा अध्यापकों और छात्रों के प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करता हूं जिन्होंने मेरे इस विद्याकीय प्रयास में उत्साहपूर्वक मेरा सहयोग किया है।

Scanned with CamScanner